श्री नवलकिशोर काङ्कर:

आप जयपुर के प्रसिद्ध कथावाचक एवं ज्योतिर्विद् पण्डित श्री जमनालालजी काङ्कर के सुपुत्र हैं। आपका जन्म आषाढ़ कृष्णा 13 संवत् 1967 को जयपुर में ही हुआ। आप जाति से गौड़ ब्राह्मण हैं। बाल्यकाल में ही माता-पिता के वियोग से आपको बहुत बड़ी विपत्ति का सामना करना पड़ा। आपने अपने पिताजी के जीवनकाल में संस्कृत, व्याकरण व साहित्य की साधारण शिक्षा प्राप्त कर ली थी। आपके पितृव्य पं. गणेश नारायणजी जयपुर तहसील में सिरस्तेदार थे। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा अग्रवाल मिडिल स्कूल में हुई। षष्ठ कक्षा तक अध्ययन कर परिस्थितियों के कारण आपको स्कूल छोड़ना पड़ा और शेष सम्पूर्ण शिक्षा स्वतन्त्र रूप से प्राप्त की। आपकी शिक्षण योग्यता का विवरण इस प्रकार है-

1.	**संस्कृत**	(क) साहित्य काव्यतीर्थ	-	कलकत्ता (बंगाल)	प्रथम श्रेणी
		(ख) व्याकरणशास्त्री	-	पंजाब	प्रथम श्रेणी
		(ग) साहित्याचार्य	-	राजस्थान शिक्षा विभाग	द्वितीय श्रेणी
2.	**हिन्दी**	(घ) साहित्यरत्न	-	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयोग	द्वितीय श्रेणी
		(ङ) साहित्यरत्नाकर	-	राजस्थान विश्वविद्यालय	द्वितीय श्रेणी
		(च) प्रभाकर	-	पंजाब	प्रथम श्रेणी
		(छ) हिन्दी एडवांस	-	उत्तर प्रदेश	द्वितीय श्रेणी
3.	**अंगेजी**	(ज) इन्टरमीजियेट	-	पंजाब	

आपने समीक्षा चक्रवर्ती पण्डित मधुसूदन ओझा के पास रह कर लगभग 12 वर्ष तक व्याकरण, निरुक्त, शतपथ आदि ब्राह्मण एवं वैदिक विज्ञान का विशेष अध्ययन किया। अलवर राज्य में संस्कृत कॉलेज की स्थापना के समय राजकीय राजगढ़ संस्कृत कॉलेज के पाठशाला विभाग के प्रधानाध्यापक रहे। कुछ समय बाद आप पारीक हाईस्कूल जयपुर में हिन्दी अध्यापक बने और इस समय आप पारीक कॉलेज, जयपुर में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं। इस पद पर कार्य करते हुए आपकी सेवाएँ उल्लेखनीय हैं।

आपको आपके जीवनकाल में अनेक स्थानों से उल्लेखनीय सम्मान प्राप्त हुआ है-

(1) राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम।

2) स्काउटिंग संस्था द्वारा पदक प्रदान से पुरस्कृत।

(3) पारीक कॉलेज की प्रबन्ध समिति द्वारा सुवर्ण पदक से पुरस्कृत।

(4) बिहार के भूतपूर्व राज्यपाल लोकनायक डॉ. एम.एस. अणे द्वारा भा.वि.प्र. समिति द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन के मुजफ्फरनगर के अधिवेशन में 'कवि शिरोमणि' की उपाधि से सम्मानित।

(5) कांकरोलीस्थ विद्या भवन की रजत जयन्ती के अवसर पर लखनऊ के श्री दुलारेलाल भार्गव की अध्यक्षता में आयोजित कवि सम्मेलन में 'कवि भूषण' की उपाधि से विभूषित।

(6) प्रादेशिक ब्रह्मसभा के द्वितीय अधिवेशन (मलारना) में सभापति बने।

(7) इसी प्रकार मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) में भा.वि.प्र. समिति के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन के पंचम अधिवेशन के सभापति बने।

(8) देहरादून में आयोजित ब्राह्मण सम्मेलन के सभापति बनाये गये। इत्यादि।

सन् 1969 में भारतीय विद्या प्रचार समिति, गोंडा (उ.प्र.) ने 'विद्यावाचस्पति' और योगिराज स्वामी श्री माधवानन्द महाराज प्रतिष्ठापित ज्ञानपीठ, जयपुर ने 'कविचक्रवर्ती' की उपाधि से आपको सम्मानित किया है। आपने सन् 1972 में राजस्थान संस्कृत संसदू, जयपुर द्वारा आयोजित अ.भा. प्रौढ़ संस्कृत गद्य लेखन प्रतियोगिता में 'यात्रा विलासम्' पुस्तक प्रस्तुत करके सर्वप्रथम स्थान प्राप्ति के उपलक्ष्य में 'गद्य सम्राट्' की सम्मानोपाधि प्राप्त की है। महामना मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित अ.भा. सांस्कृतिक संस्था भारती परिषद्, प्रयाग ने वाङ्मय के विशिष्ट वैदुष्य के निमित्त आपको सन् 1973 में 'महामहिमोपाध्याय' का अलंकरण प्रदान किया है। राजस्थान सरकार से आपको सन् 1971 में शोधकार्य योजना में 500/- का और सन् 1975 में उत्तरप्रदेश राज्यपाल ने 'यात्रा विलासम्' पर 1000/- का और सन् 1975 में ही राजस्थान सरकार से 'यात्रा विलासम्' पर 2500/- का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। सन् 1977 में आपको राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर से 'प्रबन्धगद्यमाधुरी' पुस्तक पर 3000/- का माघस्मृति पुरस्कार भी मिला है। सन् 1979 में मार्च में उक्त अकादमी के भरतपुर में हुए वार्षिक समारोह में आपको विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित किया गया है। राजस्थान संस्कृत परिषद् ने भी अपने जयपुर अधिवेशन में सन् 1977 में आपको सम्मानित किया था।

आप जयपुर असोसियेशन के डिट्रक्टि स्काउट मास्टर रहे। आपके उल्लेखनीय शिष्यों में श्री दुर्गालाल बाढ़दार, श्री भंवरलाल शर्मा, श्री घनश्याम गोस्वामी, श्री गोपाल नारायण पारीक, श्री मणिशंकर शर्मा, श्री राधागोविन्द शर्मा, श्री ईश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, श्री नन्दकिशोर गौतम तथा इन पंक्तियों के लेखक का नाम भी सम्मिलित किया जा सकता है। आपकी निम्नांकित रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं-

(1) द्विजदशाप्रकाशः, (2) सरल शिवराजविजयः, (3) कृति परिचयः, (4) संस्कृत साहित्यं हिन्दी कवयश्च, (5) यज्ञोपवीतविज्ञानम्, (6) आयुर्वेदविमर्शः (संस्कृत रत्नाकर 8/3), (7) हिन्दी कवीनां संस्कृत भाव सञ्चितिः (सं. रत्नाकर 17/1), (8) महाकवि कुमारदासः, (9) पूर्व संस्कृतभाषा लोकभाषा आसीत्, (10) संस्कृत साहित्ये हास्यरसः इत्यादि' (1) संक्षिप्त शालिहोत्र ग्रन्थः, (2) विद्वान् विद्युग्रन्थः, (3) पितृसमीक्षा, (4) गीता विज्ञान भाष्य भूमिका, (5) विहारि स्मारिका, (6) पारीक कॉलेज पत्रिका, (7) श्री मधुसूदन ग्रन्थमाला, (8) अथर्ववेद संहितायाः द्वादश काण्डस्य, विंश काण्डस्य, पञ्चम काण्डस्य त्रिषु पृथक् पृथक् बन्धनेषु अभिनव 'सायण भाष्यस्य' सम्पादनं, गुरु गंगेश्वरानन्द नेशनल वेदामिशन, क्रमशः 1983, 1984, 1985 ई. प्रकाशित। (9) गुरुवेद ज्योतिः 'गुरु गंगेश्वरानन्द अभिनन्द ग्रन्थ' (2043 वि. संवत्) (10) पत्रसाहित्यम्, (11) द्विजदशाप्रकाशः, (12) धर्म-कर्म सर्वस्वम्, (13) स्वामि माधवानन्द महाभागानां जीवन दर्शनम्, (14) अभिभाषणम् (1959 ई. में), (15) वर्ण और ब्राह्मण, (16) स्वगत मंगल प्रशस्ति, (17) अग्निहोत्रदर्शन, (18) शिव दशपदिका स्तोत्रम्, (19) आधुनिक काव्यमंजरी, (20) सरल संस्कृत व्याकरण, (21) श्रीमद्भागवत, (22) यात्राविवरण, (23) शास्त्र सर्वस्वम्, (24) प्रबन्धामृतम्, (25) स्वामी गंगेश्वरानन्द जी की जीवन झाँकी, (26) नवल सतसई, (27) यात्रा के सुखद क्षण, (28) लाठी की बात, (29) सैर सपाटा, (30) राजस्थानी कादम्बरी, (31) जयपुर का उदार परिवार, कलयुगी सतसई, वेद स्वर मंगला 21/3 कांकर विशेषांक से साभार।

आप समस्या पूर्तियाँ भी किया करते हैं। एक पद्य उद्धृत है-

मुम्बापुरी वर्णनम् -

इभ्यैरलभ्यैरथ भव्यसभ्यैराकीर्ण-मार्गा भुक्नप्रसिद्धा।
अलौकिकाऽऽलोकवती सतीव 'मुम्बापुरी' कापि जयत्यलं पूः ।।
महान्धकारावृतपण्यपक्तिषु तडित्प्रदीपाभिनयेन भास्करः।
मिषेण विद्युद्व्यजनस्य चानिलः प्रीत्याऽथवा यामधितिष्ठतः सदा।

आपकी अनेक रचनाएँ संस्कृत रत्नाकर व भारती पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी हैं। इनका संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है- (1) एका स्मृतिः (सं.र. 24/12), (2) मुम्बापुरी वर्णनम् (सं.र. 24/10), (3) सुकन्या (भारती 1/9), (4) महाकवि तुलसीदासः (भारती 1/10), (5) आरोग्यं भास्करादिच्छेत् (भारती 11/4-5), (6) स्वतन्त्रभारते संस्कृतहासः (भारती 13/1)।

आपका देवलोक गमन 10 जुलाई, 1995 ई. को हुआ।